International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(7): 31-32

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(7): 31-32
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 21-09-2015
Accepted: 26-10-2015

Bidyut Saharia
Ex Student-Delhi University, Hindu College. New Delhi, India

Correspondence
Bidyut Saharia
Ex Student-Delhi University, Hindu College. New Delhi, India

त्रि–स्कन्धीय ज्योतिषी "वराहमिहिर" का जीवन परिचय

Bidyut Saharia

भारतीय ज्योतिष के अनुसार 'वराहमिहिर' उच्च कोटि के दैवज्ञ हैं। ज्योतिष के त्रि–स्कन्धीय विभाग पर कार्य करने वाले ये प्रथम आचार्य माने जाते हैं। इनका जन्म उज्जैन के निकट 'कापित्थ' नामक गाँव के ब्राह्मण परिवार में हुआ। इनके पिता 'आदित्य दास' सूर्य के उपासक थे। इनकी माता का नाम 'इन्दुमती' था। भील जातक के उपसंहार अध्याय के अन्तर्गत वे स्वयं लिखते हैं।

''आदित्यदासतनयस्तदवाप्रबोधः कापित्थ के,
सवितृलब्धनरप्रसादः।
आवन्तिको मुनिर्मतान्यवलोक्य सम्यक्, घोरां
वराहमिहिरो, रुचिरां चकार॥''

इससे ज्ञात होता है कि ये अवन्ति के निवासी थे। वहीं पर एक स्थान कापित्थ है, जिसे काल्पी भी कहते हैं। इसी स्थान पर रहकर इन्होंने सूर्य की उपासना की और सूर्य के प्रसन्न होने पर इन्हें ज्ञान प्राप्ति का वर मिला। वराहमिहिर शब्द की व्युत्पत्ति –

"वराय अभीष्ट लाभाय तत्व आहति
अन्वेष्यति इति वराहरू मिहिर इति सूर्य॥"

अर्थात अभीष्ट लाभ के लिए तत्व का अन्वेषण करने वाले वराहमिहिर ही सूर्य हैं। इन्हें 'मगध द्विज' भी कहा गया है, इसके दो प्रमाण मिलते हैं। बृहत्संहिता के टीकाकार– भट्टोत्पल इन्हें मगधद्विज के नाम से सम्बोधित किया हैं। मगध के शाकद्वितीय ब्राह्मण सूर्य को अपना इष्ट मानते हैं। इसी कारण इन्हें मगध द्विज के नाम से कहा है। इन्होंने अपनी विद्या, अपने पिता से प्राप्त की। पिता के अतिरिक्त वराहमिहिर के अनेक दिक्षागुरु जिनमें – दिनकर, वसिष्ठ आदि हुए हैं। वराहमिहिर के पुत्र का नाम ''पृथुयश" था। जो उनकी तरह ज्योतिष विद्या के मूर्धन्य विद्वान हुए।

वराहमिहिर का समय

समय स्पष्ट नहीं है किन्तु इनकी प्रथम रचना के आधार पर उनका जन्म 407 ईसवी माना गया है। ये आर्यभट्ट के समकालीन माने जाते हैं। क्योंकि वराह ने अपने ग्रंथों में आर्यभट्ट की चर्चा की है। किन्तु आर्यभट्ट ने वराह की चर्चा नहीं की। वराह से पूर्व आर्यभट्ट (आर्यभट्टीय) नामक ग्रंथ को सन् 421 में लिख चुके थे। वराहमिहिर की प्रथम रचना ''पञ्चसिद्धान्तिका'' का समय 427 ईसवी थे।
इस आधार पर कहा गया है कि वे अपनी इस रचना से 20 वर्ष पहले उत्पन्न हो चुके थे। क्योंकि इससे कम आयु में किसी ग्रन्थ की रचना करना संभव नहीं है। अतः कहा जा सकता है, ईसवी 412 से 427 के मध्य में इनका जन्म हुआ। आचार्य आमराज ने इनकी मृत्यु का समय 509 ईसवी बताया है। अतः मृत्यु के समय इनकी आयु लगभग 97 वर्ष थे। 'ज्योति र्विदाभरण' में एक श्लोक है जिसमें विक्रमादित्य के नवरन्तों के अन्तर्गत वराहमिहिर का होना स्वीकार किया गया है।

साहित्यिक कृत्तिया

मान्यता है कि इनके समान ज्योतिषशास्त्र में समस्त विषयों का ज्ञाता कोई दैवज्ञ नहीं है। इन्होंने यात्रा, विवाह, गणित, होरा और संहिता विषयों पर अनेक ग्रन्थ लिखे हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं – पञ्चसिद्धान्तिका, बृहत्जातक, लघुजातक, योगयात्रा, विवाहपटल, समाससंहिता, बृहत्संहिता, दैवज्ञ–वल्लभा।

प्रमुख ग्रंथों का परिचय

1. पञ्चसिद्धान्तिका : यह ज्योतिष के गणित विषय से सम्बन्धित है। इसका समय ईसवी 427 माना गया है, क्योंकि वराहमिहिर ने स्वयं इसे स्पष्ट किया है। इसमें उन्होंने ग्रहों की गति, ग्रहों का भगण, अयन विचार, ग्रहण विचार, छाया साधन आदि विषयों पर चर्चा की है।
2. विवाहपटल : इसमें विवाह सम्बन्धी विषयों की चर्चा की गई है। यह ग्रंथ अप्राप्त है। पर मान्यता है कि विवाहपटल ग्रंथ काशी में विद्यमान है। इसके विषय की चर्चा भी मालूम नहीं है।
3. बृहत्जातक, लघुजातक : ये जातक अंग से सम्बन्धित हैं, जिनमें आकाश स्थित ग्रहों का अध्ययन, नवमांश आदि का विचार किया जाता है। बृहत्जातक का संक्षिप्त रूप लघुजातक है। इसमें किसी एक विषय का गहराई से अध्ययन किया जाता है। इस पर अनेक टीकाएँ भी मिलती हैं।
4. योगयात्रा : यह संहिता शास्त्र से सम्बन्धित ग्रंथ है, जिसमें यात्रा से सम्बन्धित शकुनों का वर्णन है। यात्रा के समय पशु–पक्षी, मनुष्य तथा किसी भी सजीव, निर्जीव प्राणी की चेष्टा के आधार पर फल का कथन किया जाता है।
5. बृहत्संहिता : यह वराहमिहिर का अन्तिम ग्रंथ है। इसमें सृष्टि के चमत्कारों, अद्भूत रहस्यों, दृश्यों, धर्म एवं धर्म के व्यवहार का उपयोग, दैवज्ञ की विशेषताएँ, आयुवैद आदि विषय वर्णित हैं। संहिताशास्त्र में इसका स्थान अद्वितीय है। ऐसी मान्यता है कि वराहमिहिर ने सर्वप्रथम करण ग्रंथ बनाया। इस संहिता अध्ययन से ज्ञात होता है कि बाद में उनका ध्यान फलित ज्योतिष की ओर विषेशत: मानव प्रकार के सृष्टि चमत्कार, पदार्थों के गुण, उनके धर्म, उनके उपयोग की ओर अग्रसर हुआ।

   'बेरुणी' नामक विद्वान ने लघुजातक और बृहत्संहिता का अरबी भाषा में अनुवाद किया। वराहमिहिर अत्यन्त दु:ख के साथ कहते हैं कि– ''भारत में संहिता शास्त्र का अध्ययन उतनी गहराई से नहीं किया गया जितना कि यूरोपीय विद्वानों ने किया। इसी कारण यूरोपीय देश संहिता शास्त्र में अग्रगणीय है।